edit:arunjaity.qxd 9/26/2010 9:26 PM Page 186

www.esakal.com
सकाळ
1 मार्च 2010

चित्रकूट का तपस्वी

आम जनता की पहल से किया गया विकास यह संपूर्ण क्रांति के विचार के सैद्धांतिक तत्व को नानाजी ने अपने आचरण से कर दिखाया है। ध्येयवादी राजनीति का एक आदर्श उन्होंने खड़ा किया।

नानाजी देशमुख ध्येयवाद से प्रेरित वृक्ष के समान थे जिसकी जड़ें इसी भूमि में बहुत गहरी जमीं हुई थी। उसका पोषण स्वतंत्रता आंदोलन की प्रेरणा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से मिले संस्कारों से हुआ था। दूसरों के लिए फल, फूल और छाया देने के लिए ही अपना जीवन है, इस बात का उन्हें पूरा एहसास था। ध्येयपूर्ति के लिए उन्हें राजनीति का साधन विल्कुल भी वर्ज्य नहीं था। राजनीति के सूक्ष्म दांवपेंच और होनेवाले अंतर्गत संघर्ष की उनको अच्छी समझ थी, किन्तु इस मार्ग पर चलनेवाले बड़े-बड़े नेता सत्ता की स्पर्धा मे व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा के जाल में फंसते है और जिसे साधन मानते थे वही उनका साध्य बनता। लेकिन नानाजी ने अपने बारे में ऐसा होने नहीं दिया। उसके लिए आवश्यक शक्तिशाली मनोनिग्रह, उनके व्यक्तित्व का एक आकर्षक हिस्सा था। आपातकाल के विरोध में देशभर जो विशाल आंदोलन खड़ा हुआ, उस पर सवार होकर जनता पार्टी सत्ता में आई। तत्कालीन प्रधानमंत्री मोरारजीभाई देसाई को जनता पार्टी में इकट्ठा हुए चार ही दलों के और उसमें विभिन्न विचारों के नेताओं को शामिल करने की कसरत करनी थी। ऐसे परिस्थिति में भी नानाजी की ओर स्वाभाविक तरीके से आया उद्योग मंत्री पद नानाजी ने लेने साफ इंकार किया। सत्ता को इतनी आसानी से ठुकराने के कारण नानाजी की समर्पण और त्याग की महती गाई जाती है और वह उचित ही है। परन्तु इस कृति में केवल त्यागवृत्ति नहीं, तो इस विषय के पीछे की उनकी कारण-मीमांसा से नानाजी की मार्मिक दृष्टि का पता चलता है। मोरारजी के मंत्रीमंडल में एक सहयोगी के नाते काम करते समय उनके कहें के अनुसार ही व्यवहार करना पड़ता। फिर उनसे गलती हुई तो उनसे जवाब कौन पूछेगा, यह उनका सवाल था। केन्द्रित होना यह सत्ता का स्वभाव है और अधिक केन्द्रित हुई सत्ता उतनी अधिक भ्रष्टाचार की ओर जाने का खतरा रहता है। इस बात का ठोस अहसास नानाजी के इस विचार से दिखाई देता है। नानाजी की दृष्टि में देश अर्थात देश के लोग था और इस लोकशक्ति की उपासना उन्हें करनी थी। उन्हें विश्वास था कि ऐसी जागरूक लोकशक्ति ही सत्ता को सही दिशा में मोड़ सकती है।

नानाजी की संपूर्ण जीवनयात्रा पर नजर डालने से ध्यान में आता है कि संघ से प्राप्त मूल प्रेरणा के अनुसार उन्होंने विभिन्न नये-नये कार्य शुरू किये क्योंकि वे मूलतः एक प्रयोगशील व्यक्ति थे। निर्लेप और निर्मोही मन के कारण वे सहजता से लोगों को अपने साथ जोड़ते थे। अलग-अलग जाति पंथ के, विविध क्षेत्र के लोग उनकी ओर आकृष्ट होते थे। भिन्न राजनीतिक विचारधारा रखनेवाले राममनोहर लोहिया, जयप्रकाश नारायण, मधु लिमये आदि अनेक नेताओं के साथ उनकी गहरी मित्रता थी। 1967 में शक्तिशाली कांग्रेस को संयुक्त विधायक दल के रूप में चुनौती देने का और आपातकाल में जनता पार्टी को संगाठित करने के प्रयोग में नानाजी की महत्वपूर्ण भूमिका थी। यह एक वेबुनियाद भ्रांती है कि इसके पीछे कांग्रेसद्वेष जैसी कोई भावना थी। किसी भी विकासशील देश में विपक्षी राजनीतिक विकल्प खड़ा किए जाने की बड़ी आवश्यकता होती है। एशिया, अफ्रीका में कई देशों की आज की स्थिति देखने से यह आवश्यकता और ज्यादा महसूस होती है। नानाजी द्वारा निभाई गई राजनीतिक भूमिका का मोल इसी दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए। उन्होंने महात्मा गांधीजी के ग्राम स्वावलंबन के विचार पर प्रत्यक्ष रूप

से अमल कर दिखाया। गांधीजी ने कांग्रेस को विसर्जित कर उसे लोकसेवक संघ के रूप में परिवर्तित करने का सुझाव दिया था। ऐसा करना कितना उचित है, इसके बारे में अलग-अलग राय और विचार हो सकते है, लेकिन सामाजिक सेवा में समर्पित कार्यकर्ताओं की दीवार खड़ी रहनी चाहिये, इस सुझाव का भावार्थ था, यह ध्यान में रहना चाहिये। राजधानी दिल्ली को पीठ दिखाकर दूरदराज गांव मे लौटनेवाले कितने लोकसेवक पिछले 62 वर्षों में निर्माण हुए? लेकिन नानाजी ने मात्र इसी रास्ते को चुना। आयु के 60 वर्ष के बाद नेताओं को राजनीति से निवृत्त होकर समाजकार्य के लिए स्वयं को समर्पित कर देना चाहिये। वे केवल यह सुझाव देकर नहीं रूके, बल्कि स्वयं उस पर प्रत्यक्ष रूप से अमल करके दिखाया ।

पहली बार उत्तर प्रदेश के सबसे पिछड़े गोंडा जिला, फिर बाद में चित्रकूट को अपनी प्रयोगशाला बनाकर दीनदयाल शोध संस्थान के माध्यम से उन्होंने कार्य प्रारंभ किया। वहां के सामान्य लोगों की सुप्त शक्ति को जागृत किया और उसके माध्यम से एक-एक प्रयोग को वास्तविक आकार देते गये। बंजर भूमि में हरियाली नजर आने लगी और लोग गरीबी की गर्त से बाहर आ गये। किसी भी सामाजिक और रचनात्मक कार्य के लिए विदेशी सहायता की वैसाखी का इस्तेमाल कभी नहीं किया। केवल अमूर्त विचारों में रमनेवाले वे नहीं थे। जो कुछ था, उसे सगुण साकार करने की लगन उन में थी और इसी से चित्रकूट के तपस्वी के रूप में उनकी पहचान हुई।

यदि पूछा जाए कि पिछले 62 वर्षों में देश की प्रगति में सबसे बड़ी कमी कौन-सी है, तो स्वतंत्रता संग्राम में सुप्त ध्येयवाद में आई गिरावट ही इसका एकमात्र जवाब दिखाई देता है। यह गिरावट सभी दलों में दिखाई देती है और संघ परिवार भी इस मे अपवाद नहीं है। व्यवहारवाद का सिक्का वहां भी अमल में लाया जाता, यह समूचे देश ने देखा है। ऐसे वायुमंडल में नानाजी का हमारे बीच में रहना एक दिलासा देने वाली बात थी। सामर्थ्यवान देश के निर्माण के स्वप्न को साकार करने के लिए दिन-रात संघर्षरत इस ऋषितुल्य व्यक्ति की ओर उंगली दिखाकर उस उज्ज्वल इतिहास का अहसास करा सकते थे। वह उदाहरण आज समाप्त हो गया।